

वा चिन्मन्यसे कृदा 5, 36, 2. अकृतदिति मन्यते 10, 146, 4. पश्यन्मन्ये मनसा चर्त्ता तान् 130, 6. CAT. Br. 1, 6, 3, 11, 4, 9. न वै तथाभ्यधामसि 4, 6, 5. स मेने न वदिष्य इति 14, 7, 4, 1. 20. मन्येत यत्र इमिति ACV. GRAB. 1, 1, 4. — यदि नान्यथा मन्यसे HIT. 21, 22. मन्यते पापकं कृत्वा न कश्चिदेति मामिति Spr. 2124. 2126. नियोज्यमिति मेनिरे MBH. 5, 6024. R. 1, 9, 36. DAÇ. 2, 14. KATHÁS. 13, 99. तन्मन्ये नार्थकामो धर्मस्य शततमीमपि कला स्पृशत इति DAÇAK. in BENF. Chr. 182, 15. PANÉAT. 18, 17. संज्ञेयमिति मन्वानः MĀRK. P. 77, 24. एको ऽकृमस्मीत्यात्मानं यत्नं कल्याणा मन्यसे wenn du von dir glaubst Spr. 363. कृतमित्येव तत्कार्यं मेनिरे MBH. 1, 7709. तत्किं मन्यसे राजपुत्रि मृषाद्यं तदिति UTTARARĀMA. 81, 2. मन्ये gaṇa चादि zu P. 1, 4, 57. eingeschoben oder vorgesetzt ohne Einfluss auf die Construction (also auch ohne इति): नूनं मन्ये न दोषो ऽस्ति नैषधस्य MBH. 3, 2288. R. 1, 37, 8. Spr. 30. 294. 783. 1823. 2939. 3189. 4237. VID. 272. DHŪRTAS. in L.A. 72, 13. 83, 10. 92, 1. ironisch P. 1, 4, 106. 8, 1, 46 (Einfluss auf den Ton des nachfolgenden fut.). एहि मन्ये श्रोतुं भोक्तृमते भुक्तः सो ऽतिथिभिः Schol. अहं तव प्रिया मन्ये येनैवं तं प्रभाषसे R. 3, 51, 25. — कृतो चेन्मन्यते कृतुम् KATHOP. 2, 19. प्राप्तकालमन्यत er glaubte, dass die Zeit gekommen sei, MBH. 3, 2206. 2261. सतानं मेनिरे glaubten an, erwarteten R. 1, 13, 24. शरीरत्यागमात्रेण शुद्धिलाभमन्यत RAGH. 12, 10. ध्रुवसिद्धिराप यथार्थनाम्नः सिद्धिं न मन्यते MĀLAV. 47, 22. पत्न्यात्मत्र देवी मन्यते vermuthet 12, 3. KATHÁS. 37, 11. सावर्तकममंसत BULG. P. 4, 7, 31. प्रयोपासनया शास्तिं मन्वानः BHATT. 7, 73. किं बहु मन्यसे so v. a. wozu stellst du grosse Betrachtungen an? MBH. 13, 44; vgl. भाषसे किं बहु 47. — 2) halten für Etwas (acc.): अथर्वामिव मन्यमाना RV. 4, 18, 5. 2, 3. ये त्वा देवोन्निकं मन्यमानाः 1, 190, 5. 6, 18, 4. अथा मन्ये बृहदसुर्यमस्य 30, 2. अग्रेनीकं वरुणास्य मंसि 7, 88, 2. CAT. Br. 1, 3, 2, 7, 6, 3, 11. मरिष्यत्तं चेद्यज्ञमानं मन्यते 12, 3, 3, 1. चिरं तन्मेने यद्वासः पर्यधास्यत es schien ihm zu lange das Gewand zuvor umzunehmen 11, 5, 4, 4. AIT. Br. 3, 27. 36. 48. न ते कुशलं मेनिरे 7, 18. KATHOP. 2, 13. M. 4, 248. 7, 170. 171. 173. 9, 61. BHAG. 2, 26. MBH. 1, 5971. 5996. 6034. 6040. 2, 1987. 3, 2345. 2789. 3, 5425. अस्य दुःखस्य चोत्पत्तिं (so die ed. Bomb.) भोष्ममेवेक मन्यते 6079. तमेकं द्विदं संख्ये मेनिरे शतशो द्विपान् 7, 1173. नहि तुल्यं बलं मन्ये मम राज्ञा R. 1, 34, 11. 33, 20. 61, 20. Spr. 69. 1993. 2123. 2820. 4383. 5382. ÇĀK. 104, 9. MEGH. 81. RAGH. 1, 32. 67. 3, 65. 12, 16. 52. KATHÁS. 4, 45. 32, 69. 37, 214. VID. 76. BULG. P. 3, 23, 30. BRAHMA-P. in L.A. (II) 56, 13. न (sc. किंचित्) सुतामन्यते परम् R. 2, 74, 22. तेत्रज्ञं त्वा तात मन्याम सर्वे MBH. 1, 3612. मन्यति 3, 13444. Spr. 2932. मन्यामः MĀRK. P. 69, 55. अमन्यत् 24, 99. मनुते BULG. P. 1, 7, 5. 4, 27, 4. Spr. 2337. अमन्यत (so ist mit der ed. Calc. st. अनुमत zu lesen) RĪGA-TAR. 2, 168. मन्वहे KATHÁS. 43, 367. मन्वान MBH. 3, 12069. 12087. KATHÁS. 19, 38. BHATT. 6, 87. अमस्त RAGH. 3, 27. 6, 84. KUMĀRAS. 5, 18. पे (so mit der ed. Bomb. zu lesen) पुंसां त्रिषु लोकेषु सर्वप्रारममंसमहि MBH. 7, 6537. मा मंस्थाः RĪGA-TAR. 3, 243. BHĪG. P. 1, 8, 16. BHATT. 9, 117. मंस्यते BHAG. 2, 35. तं पौरजनवद्यालानयोद्यामिव पर्वतम् । मन्यस्व वनिते नित्यं सरयूवदिमा नदीम् ॥ R. 2, 93, 15. भेषजमिव मन्यते Spr. 1742. ÇĀK. 107. RAGH. 3, 9. सुखमन्यते er hält es für ein Glück BULG. P. 3, 30, 10. हारमुदारं सा मनुते कृशतनुरिव भारम् (= भारमिव) Gīt. 4, 11. st. des praed. im acc. ein adv.: यत्रैतदन्धत्रासमन्यसि CAT. Br. 14, 6, 3, 26. पृथगात्मानं प्रेरि-

तारं च मत्वा ÇVETĪCV. UP. 1, 6. ततथा मत्वा KATHÁS. 40, 28. कृतो ऽस्मि यदि मामेवं भगवानपि मन्यते R. 2, 90, 15. मेने जन्म निज्ञं पुनः 29, 174. न मामर्हसि — अन्यथा मनुम् (ध्यातुम् MBH. 3, 1857) für Jemand anders halten, verkennen INDR. 3, 41. mit बहु für viel halten, hochhalten, zu schätzen wissen (zahlreiche Belege u. बहु): स्वानुपानार्हयामास बहु मेने च पाण्डवान् MBH. 8, 82. HARIV. 6999. 7270. KUMĀRAS. 6, 20. KATHÁS. 21, 67. कथं हि भर्ताच्छिष्टा श्रियं स बहु मंस्यते R. GORR. 2, 62, 24. RĪGA-TAR. 5, 276. बहु मनुते Gīt. 3, 9. बहुमन्य MBH. 3, 1814. mit लघु gering halten, — anschlagen: प्रथमोपकृतं मरुतः प्रतिपत्त्या लघु मन्यते ÇĀK. 160. पर्यङ्के चास्तरणम् u. s. w. तृणमिव लघु मन्यते Spr. 1738. mit साधु für gut halten, gutheissen, billigen, loben: इमं निष्पलमारम्भम् — कः साधु मन्येत R. GORR. 2, 63, 27. 3, 70, 14. RĪGA-TAR. 4, 497. आ परितोषाद्विडुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम् ÇĀK. 2. न साधु मेने ताः सर्वा भूतले यावतीः पुरः । कामान्कामयमानो ऽसौ तस्य तस्योपपत्तये für gut —, für entsprechend haltend BULG. P. 4, 23, 12. त्वामुदरं साधु मन्ये Spr. 1088. साधुमता (= कल्याणवता, also instr. von साधुमत् Schol.) सताम् MBH. 3, 7467. कृषिं साधिति मन्यते M. 10, 84. नवद्वारं दिक्स्ताङ्गं तत्रामनुत साधिति BHĪG. P. 4, 29, 4. mit असाधु missbilligen 7, 8, 27. Das Prädicat kann, wenn eine Geringachtung ausgedrückt werden soll, auch im dat. stehen nach P. 2, 3, 17 nebst V Artt. Vop. 3, 19. लक्ष्मीं तृणाय मन्यते Spr. 303. VER. in L.A. (II) 9, 19. BHATT. 2, 36. त्रैलोक्यरक्ष्यमपि न तृणाय मन्ये Spr. 406. KATHÁS. 43, 90. acc. 64, 113. — 3) sich halten für (nom.): gehalten werden, gelten für, erscheinen, scheinen: अमर्मणो मन्यमानस्य मर्म RV. 3, 32, 4. अमर्मिर्मन्यमानः 5, 32, 3. मृक्तो मन्यमानान् 1, 178, 5. 4, 29, 2. 2, 11, 2. 8, 98, 4. स्वयं चित्स मन्यते दाप्रुरिर्ज्ञेना यत्रा सोमस्य तृम्यसि 4, 12, 1. 129, 5. 136, 7. 10, 8, 9. गिर्यश्चिन्ति जिह्वे पश्यानासो मन्यमानाः als Tiefen erscheinend 8, 7, 34. 3, 62, 1. सुवीर्यस्ते जनिता मन्यन्तः 4, 17, 4. दुरोषासो अमन्महि 8, 1, 13. 14. 43, 19. 1, 173, 5. CAT. Br. 4, 5, 2, 9. यमन्यागमिष्यन्मन्येत 12, 4, 4, 19. 14, 4, 20. 3, 25. 0, 2, 15. सर्पा जीर्यन्ती ऽमन्यत TS. 1, 3, 4, 1. पराभविष्यन्ती मन्यामेहे 2, 3, 4, 4. KHĀND. UP. 8, 8, 3. सो ऽसुरान्मृष्टा पितृवामन्यत TBH. 2, 3, 3, 2. PANĀV. Br. 8, 9. येन तमसा प्रावृता मन्यते AIT. Br. 3, 19. 1, 1, 2, 31. पण्डिता (so die Scholien) मन्यमानाः KATHOP. 2, 5. MUNP. UP. 1, 2, 8 (nach der Lesart der Scholien). ज्ञात्यन्धं स्व मन्येत er erscheine wie blind geboren, thus, als wenn er blind sei, MBH. 4, 102. येन स्वैरपि मन्यते जीवतो ऽपि मृताः gehalten werden für Spr. 1238. Statt des nom. hier und da auch der acc.: कृत्येन्मन्यते कृतम् KATHOP. 2, 19. पण्डितं मन्यमानाः 5. MUNP. UP. 1, 2, 8 (die Scholien an beiden Stellen पण्डिता). MBH. 13, 1543. — 4) meinen so v. a. für gut finden, billigen: कथं वा गौतमी मन्यते ÇĀK. 36, 3. यथा भवान्मन्यते 101, 19. VIER. 12, 9. यदि मन्यसे MBH. 3, 2299. 2331. 2688. मन्यसे यदि 2772. 3025. किं वा मन्यत पुत्रकाः (die ed. Bomb. मन्यधम् bei einer auch sonst abweichenden Lesart) 1, 8370. तथेति तदमन्यत KATHÁS. 27, 149. 28, 34. SĀH. D. 11, 14. Jmd (acc.) beistimmen MBH. 14, 799. — 5) denken an so v. a. mit Sinn und Herz zugewandt sein, ehren, schätzen (स्तु SĀH.): अग्निं तं मन्ये यो वसुः RV. 5, 6, 1. 9, 1. 1, 127, 1. यस्तां कृदा कीरिणा मन्यमानो जोह्वोमि 5, 4, 10. मन्यं त्वा यज्ञियं यज्ञियानाम् 8, 83, 4. 10, 7, 3. अमन्यमानो अमि मन्यमानैः (nämlich अमवः oder ähnlich) 1, 33, 9. शंसंति के चिन्निर्विदो मनानाः andüchtig 6, 67, 10. नेन्द्र-